धूप-छाँव के अफ़साने

अक्श

आकिब जावेद

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Aquib Jawed 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7310-315-0

Cover design: Daksh

Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: February 2026

Dedications (समर्पण)

यह पुस्तक 'धूप-छाँव के अफ़साने''अक्श'मैं अपने प्यारे माता-पिता को समर्पित करता हूँ, जिनके प्रेम और स्नेह, मार्गदर्शन और अटूट विश्वास ने मेरी हर सफलता की नींव रखी। साथ ही, इसे मैं अपने भाई-बहन को समर्पित करता हूँ, जिनके प्यार, हँसी और साथ ने मेरी जिंदगी को संवारने में हमेशा मदद की। और अंत में, यह पुस्तक मैं अपने मित्रों, प्रिय पाठकों और शुभचिंतकों को समर्पित करता हूँ, जिन्होंने मेरी लेखनी पर भरोसा किया और मेरे शब्दों को अपनाया।

आप सभी के प्यार, विश्वास और सहयोग के बिना यह सफ़र इतना खूबसूरत, यादगार और दिल को छू लेने वाला नहीं बन पाता।

Preface (भूमिका)

हर कहानी, हर एहसास और हर शब्द का एक अपना सफ़र होता है। 'धूप-छाँव के अफ़साने''अक्श' उन अनुभवों और भावनाओं का संगम है, जो मैंने अपने जीवन के छोटे-छोटे पलों, खुशियों और चुनौतियों से सीखे हैं।

इस किताब को लिखने की प्रेरणा मेरे अपने अनुभवों, मेरे परिवार, दोस्तों और अपने प्रियजनों से मिली है, जिन्होंने मुझे हर कदम पर सहारा दिया और मेरी सोच को गहराई दी। साथ ही, अपने दैनिक जीवन के अनुभवों से भी प्रेरणा मिली, जो अक्सर हम महसूस तो करते हैं, लेकिन शब्दों में बयां नहीं कर पाते।

यह किताब उन प्रिय पाठकों के एहसासों को जीवित करती है, जो उन्होंने अपने दैनिक जीवन में अनुभव किए कभी ख़ुद में, कभी अपनों में, कभी किस्सों में, तो कभी कहानियों में। क्योंकि ज़िंदगी भी तो कभी धूप होती है, कभी छाँव।

मेरी आशा है कि यह पुस्तक न केवल पढ़ने में सुखद हो, बल्कि आपको अपने अनुभवों, परिवार, दोस्तों और यादों की गहराई में झांकने का अवसर भी दे, और उन कहानियों को उजागर करे जिन्हें आपने सुना या महसूस किया हो, लेकिन शब्दों में बयां नहीं कर पाए हों।

पाठकों से मेरी यही विनती है कि इसे अपने दिल से पढ़ें, और इन अफ़सानों में अपना कुछ हिस्सा भी खोजें।

Acknowledgement (आभार)

मैं खुदा का शुक्र अदा करता हूँ, जिनकी रहमत, करम और तौफ़ीक़ ने मुझे यह हुनर, ये एहसास और इन्हें शब्दों में ढालने की क्षमता बख़्शी।

मैं अपने परिवार का दिल से आभारी हूँ—

जिनके प्यार, दुआओँ, हौसले और भरोसे ने मुझे हमेशा थामे रखा।

उनकी मौजूदगी ने मेरी सोच को गहराई दी और मेरी लेखनी को अपना रंग दिया।

मैं अपने मित्रों, शुभचिंतकों और पाठकों का भी धन्यवाद करता हूँ, जिनके स्नेह, सहयोग और हौसला-अफ़ज़ाई ने इस पुस्तक को एक मुकम्मल रूप दिया ।उनकी मोहब्बत और यक़ीन ने मेरे सफ़र में एक ख़ूबसूरत नरमी और ताक़त दोनों जोड़ी। आप सभी की वजह से यह पूरी यात्रा, एक तजुर्बा नहीं, बल्कि एक एहसास बनकर उभरी, नाज़ुक भी, गहरी भी, और यादगार भी।

अनुक्रमणिका

1. (तन्हाई, पहचान और आत्म-संघर्ष) 1
मैं कौन हूँ? 1
अजनबी हूँ खुद से 2
मन की हलचल 3
जिंदगी 4
दिल के राज़ 5
कौन अपना? 6
बस और नहीं 7
खामोश हो गए 8
सच की तलाश 9
जंग-ए-जुस्तजू 10
कसक 11
पिघलता दिल 12
2. (रिश्ते, भरोसा और टूटन) 13
कौन परवाह करता है? 13
रहबर 14
पहचान माँगता है 15
सफ़र-ए-'अक्श' 16
तह-ए-पहचान 17
हार मंज़िल नहीं 18
अधूरे ख्वाब 19
असली और नकली 20

गलतफ़हमियों की दीवार.. 21
नकली मुस्कान 22
3. (जीवन, समय और संघर्ष).. 23
अपने नाम का दिया 23
वक़्त का दामन 24
मंज़िल 25
तक़दीर और मेहनत 26
ख्वाबों की ताबीर.. 27
सबक 28
मुक्तसर ज़िंदगी 29
सफ़र-ए-ज़िंदगी 30
ख्वाब खत्म न हुई। 31
खोता सितारा... 32
पैसे की तलब... 33
4. (प्रेम, जुदाई और टूटे वादे).. 34
ख्वाब और ज़िंदगी 34
ग़ाफ़िल 35
अधूरी मौजूदगी 36
जलता हुआ जुगनू.. 37
किधर जा रहे हैं.. 38
इंशा से इंशा बन जाऊँ 39
माँ... 40
कदर इंसान करता नहीं.. 41
5. (मनोबल, हौसला और प्रेरणा) 42

हौसले की जीत 42
शोहरत की मिसाल... 43
मेहनत और विश्वास 44
6. (समाज, मूल्य और प्रश्न)... 45
अस्तित्व 45
दो बोल.. 46
भरोसे की उम्मीद 47
7. (ज़िंदगी की मायूसी और स्वीकार) 48
ज़िंदगी से बातें... 48
किरदार और ख्वाब 49
ज़िंदगी का हिसाब.. 50
रूह का सफ़र... 51
वादों का आज–कल.. 52
हैरान ज़िंदगी.. 53
8. (सौन्दर्य, कल्पना और भावनात्मक चित्रण) 54
छोटा ताज... 54

1. (तन्हाई, पहचान और आत्म-संघर्ष)

मैं कौन हूँ?

1. थोड़ा भटका हुआ, थोड़ा गुमराह हूँ।
शायद अपनी ही आदतों से, खुद ही परेशान हूँ।
न जाने क्या यहाँ, तलाशता फिर रहा,
एक अन्जान सी कसक लिए, थोड़ा हैरान हूँ।
उलझा इतना कि, खुद से ही पूछता,
आख़िर वो कौन है, आखिर मैं कौन हूँ।

खुदाया, तू इल्म दे, थोड़ी हिदायतें,
कि खुद को बता सकूँ, आखिर मैं कौन हूँ।
क्यूँ घिरता जा रहा, गुनाह के गिरह में,
क्यूँ समझ न पाए ये, आखिर मैं कौन हूँ।

थोड़ा बचपन गया, थोड़ी जवानी भी **'अक्श'**,
फिर भी खबर नहीं, आखिर मैं कौन हूँ।

अजनबी हूँ खुद से

2. कैसा इंसान हूँ, जो आईने को पढ़ नहीं पाया,
जब भी मिलता रहा खुद से, सच कह नहीं पाया।
बस इस दुनिया से मिलने को, बदल डाले कई रंग-रूप,
मैं कौन हूँ, मैं कौन था — ये समझ नहीं पाया।
अब भी भटक रहा हूँ, आज भी, एक अजनबी के संग,
कभी फ़ुर्सत में '**अक्श**' मिलेंगे — वो वक़्त नहीं आया।

मन की हलचल

3. आँखें ये मोती, भरती हैं
मन की आवाज़, पिघलकर।
जीवन की जब अभिलाषा
करती है मन में हलचल।
स्वप्नों की बाधाओं से
लड़ता है मन ये, पल-पल।
कब सुबह निकल आती है
रातें सारी, जग-जग कर।
अब दृढ़ संकल्प है अपना,
पाएंगे स्वप्नों को, जल-जल कर।
आँखों से बरसेंगे मोती,
सुख की चाह में, ढलकर।
आँखें ये मोती भरती हैं,
मन की आवाज़, पिघलकर।

जिंदगी

4. सवालों से घिरा इंसा, कई बातों से डरता है।
हक़ीक़त ख्वाब की दीवार पर, चढ़ता-उतरता है।
कई बिखरी हुई चाहत, तड़पती है सिमटने को।
अँधेरी रास्तों पर ये, उजालों को तरसता है।
ये नींदें कौन सी हैं, ख्वाबों को रिझाती हैं।
बहुत से ख्वाब आने पर, नींदों को तरसता है।
मुकम्मल कल भी ना थे, मुकम्मल आज भी ना हो।
मगर रंग-ए-जीवन को, पाने को तरसता है।
ये कैसी जिंदगी है, ढलती जा रही है।
खुद अपनी जिस्म पर अपना, ना कोई जोर चलता है।
हैं कठपुतली इस दुनिया में, इशारों पर मचलते हैं।
जहां से दूर जाने के, बातों से डरता है।
ये नींदें खुलती हैं **'अक्श'**, अक्सर आधी रातों को।
डरा-सहमा हुआ ये, ना जगता है ना सोता है।

दिल के राज़

5. चेहरे की हसीं पर, इक खामोशी है,
कुछ जो राज है, आँखों में पिघलता है।
ये ऐश-ओ-इशरत, ये सोहरत, सब ख़ाक हैं,
लोगों से मिलकर, जब मुस्कराना पड़ता है।
जीवन के पथ पर, ये ऊँच-नीच,
काँटों को भी, अपना बनाना पड़ता है।
दिलों में क्या है, ख़ुद ही ना समझे **'अक्श'**,
बस हँसते हुए, सब भुलाना पड़ता है।

कौन अपना?

6. सुनाना किस्से, किसे ना चाहें,
सुनाए किसको, है कौन अपना।
दिल की बातों को, कौन समझे,
किसे कहें हम, है कौन अपना।
जिसे भी पाया, वो अपना बनकर,
दुखों से खेला, है कौन अपना।
पराई आँखों से डर रहा दिल,
मिले हैं धोके, है कौन अपना।
तलाशता है, ना जानें फिर क्यूँ,
जो मन को समझे, है कौन अपना।
समझ सके, बिन कहे ही मन को,
है कौन ऐसा, है कौन अपना।
सुनाना किस्से, किसे ना चाहें,
सुनाए किसको, है कौन अपना।

बस और नहीं

7. कितने गिले करे अब, बस और नहीं।
हर बार गलतिया की, बस और नहीं।
ज़ायज़ है ज़िंदगी में, गुस्सा अपनों पे ही,
वो समझने लगे पराये, बस और नहीं।
तकलीफ़ बहुत होती, अपनों की चोट से,
अब और किसी से दोस्ती, बस और नहीं।
अब दास्ताँए दिल, किसे सुनाए, **'अक्श'**,
सब रूठने लगे, बस और नहीं।

खामोश हो गए

8. सब अपने-अपने किस्सों, के साथ हो गए।
एक हमही तन्हा-तन्हा, खामोश हो गए।
ये जंग जिंदगी को, किस ओर ले गई।
जो रास्ते बताकर, खामोश हो गए।
कुछ लुत्फ चाहते थे, गवारा ही ना हुई।
बस दौलतो के आगे, खामोश हो गए।
दो दिन की जिंदगी है, हस-खेल लू यहाँ।
पर बंदिशों के आगे, खामोश हो गए।
अब और कितनी ताकत, से आजमाइसे ये होंगी।
चलो हार मान ली अब, खामोश हो गए।
तेरी दुवाएँ '**अक्श**', मुफीद ना रही।
थक-हार जिंदगी से, खामोश हो गए।

सच की तलाश

9. किस दायरे में सिमटा है, ज़िंदगी का सच,
सदियाँ गुज़र गईं, सच मिला नहीं।
ये तलाश उम्र संग, ढलता चला गया,
देखा जो हाथ खोलके, कुछ भी मिला नहीं।
हैरत भरी निगाह से, किसकी तलाश **'अक्श'**,
सब लोग बढ़ गए, तू ही मिला नहीं

जंग-ए-जुस्तजू

10. इस मानिंद जुस्तजू, उस मानिंद आरज़ू,
तन्हा ही रह गए, दोनों की जंग में।
एक बारगी दिल को, ख़ारिज किया जेहन ने,
मिल जाते तो भला था, दोनों एक संग में।
जब काबू में ख़ुद, रहता नहीं ये नफ्स,
पुरसुकूँ रंग की रंगत, चढ़ पाए कैसे मन में।
सारी उमर लड़ा, चाह जुस्तजू को **'अक्श'**,
पर मौत भी आई, वो भी बिना खबर के।

कसक

11. हर पल तो बदल जाता है, '**अक्श**', इस मन का मिज़ाज़।
पर ये बात और किसी से, कह नहीं पाएँ।
खुद जूझते रहे सारी उम्र, लेकर यही कसक,
कि आखिर क्यों? खुद पे विजय कर नहीं पाएँ।

पिघलता दिल

12. एक अल्फाज़ से पिघला, ये दिल अपना,
बहुत कोशिश की, कि हारूँ ये दिल अपना।
कि थोड़ी ताकीद कर लेता, अपनी गुमानी का,
कहा माना हर बात, ये दिल अपना।
ज़रा सी शौक बचपन से, पाला था हमने भी,
मगर एक शौक पे ठहर पाये, कहा ये दिल अपना।
क़सीदे पढ़ लिये, रंग गए दुनिया के रंगों में,
एक पहचान की खातिर, कितना बदला ये दिल अपना।
सुना था किस्से हमने भी, तरक्कियों की निशानी के,
खुद नज़रे मिलाने से, डरा करता ये दिल अपना।
ये संजीदगी अल्फ़ज़ों में, कैसे उतारे 'अक्श',
बहुत कोशिश किया, ना पिघला ये दिल अपना।

2. (रिश्ते, भरोसा और टूटन)

कौन परवाह करता है?

13. कौन है, जो किसी की परवाह करता है?
एक दुख ही है, जो हर मोड़ पर साथ देता है।
ज़ालिम ज़िंदगी ताउम्र उसे दुश्मन कहता रहा!
वही तो दोस्त है, जो गुमराहियों से दूर रखता है।

रहबर

14. ज़हा और बात हो, थोड़ा इंतज़ार हो।
हो कोई तो यहाँ, जो साथ-साथ हो।
बैठे हुए कहीं, अंजान शख़्स थे।
कोई रहबर मिले, जो साथ-साथ हो।
है ढूँढते रहे, खुशियाँ ही उम्र भर।
किसको खबर यहाँ, आस-पास हो।
तन्हाइयों की टीस, बेड़ियाँ हैं नफ़्स की।
खुद को कबूल हो, कोई पाक-दार हो।
दामन में तेरे भी, दाग़ बहुत हैं **'अक्श'**।
कपड़े सफ़ेद में, बस पाक-साफ़ हो।

पहचान माँगता है

15. मुझे एहसास है, अपने अतीत की।
 वो जिंदगी से मेरी, कुछ और माँगता है।
पत्थर भी हमने देखें, हैं आईने भी हमने।
वो बुज़दिलों की दुनिया का सरताज माँगता है।
कुछ मुफ़लिसी ने मारा, कुछ दरिया-ए-दिल ने हमको।
अब सामने से हर कोई, पहचान माँगता है।
सब खोए हुए हैं ऐसे, अपने ख्याल में ही।
इंसान होकर इंसा का रिवाज़ माँगता है।
हम पूछते भी कैसे, वो समझने लगे हैं दुश्मन।
अब दुश्मनी भी मुझसे, ईमान माँगता है।
अब सोच-सोच कर **'अक्श'**, हैरान हो रहा हूँ।
कैसी है ये दुनिया, कैसा इंसान माँगता है।

सफ़र-ए-'अक्श'

16. दोस्त भी नहीं हुए, दुश्मनी क्या करें।
एक सिलसिला चला, वादों में बह गए।
वादों का चलन, खामोश ना रहा।
यादों में खोए-खोए, नशे में उतर गए।
उदासी चेहरे पर, ऐसी हुई तारी।
गुनहगार तो नहीं थे, गुनाहगारों में हो गए।
दिल-ए-सुकून की राह कहाँ है अब।
यादों में खोए-खोए, दीवाने से हो गए।
अब तो खबर नहीं, किस हाल में हूँ **'अक्श'**।
अपने पते पर निकले थे, तेरे घर पहुंच गए।

तह-ए-पहचान

17. अच्छा तो नहीं है कि, हमराह बदल डाले,
तेरे नाम की तसबीह से, तेरा नाम बदल डाले।
कसमें वादे सारे, क्यूँ भूल गए हैं हम,
हम साथ तो चलते हैं, क्यूँ चाल बदल डाले।
मुमकिन तो नहीं है कि, हर बात में हम हों साथ,
बस साथ निभाने को, किरदार बदल डाले।
रिश्तों को निभाने को, कुछ तुम भी झुको, हम भी,
हर बात में लड़-लड़ कर, पहचान बदल डाले।
क्या देंगे मिसाले हम, आने वाली नस्लों को,
कि प्यार के रिश्ते को, नफरत में बदल डाले।
अब **'अक्श'** बताओ तुम, भटकोगे किस दर पर,
जिस नाम से वाकिफ थे, वो नाम बदल डाले।

हार मंज़िल नहीं

18. पूछने वालों जरा पूछ कर देखो, अपना बनकर,
जब अपने ही देते हैं शिकस्त, अपना बनकर।
अब भरोसे के काबिल, यहाँ कौन रहा,
जब खुद ही कुर्बान रहे अपनों पर, अपना बनकर।
ये इम्तेहान है, जीत जाओगे तुम भी **'अक्श'**,
ये हार मंज़िल नहीं, चला जायेगा सपना बनकर।

अधूरे ख्वाब

19. सुख तलाशने निकले हो, जहाँ में,
खुद से मिल कभी, तेरे आस-पास है।
बस एक वक़्त का इंतज़ार था, जो हमने न दिया,
वो बैठा है तुझसे मिलने को, तेरे साथ-साथ है।
कभी खफा हो जाये ज़िंदगी!, तो हैरान न होना,
यही दस्तूर है दुनिया का, जो सबके साथ है।
मुकम्मल कोई आज तक, हो न सका **'अक्श'**,
सब रह गया जहान में ही, जितने भी ख्वाब हैं।

असली और नकली

20. एक मुलाक़ात से नहीं होती, किसी की परख,
एक चेहरे में, कई चेहरे छिपे होते हैं।
जो बदल-बदल के मिल जाते हैं, कई रंग रूप में,
वो असल में जो होते हैं, वो नहीं होते हैं।
तब भरोसे की बुनियाद भी टूट जाती है,
जैसे वो दिखते हैं, जब वैसे नहीं होते हैं।
अब भरोसे के काबिल, यहाँ कौन रहा, '**अक्श**',
जब एक चेहरे में, कई चेहरे छिपे मिलते हैं।

गलतफ़हमियों की दीवार

21. है वादे तो बहुत, निभाने को कौन है,
जिसे अपना मान बैठे, उसे बताने को कौन है।
बस इल्तिज़ा थी यही, कि दोस्त बन के रह,
पर गलतफ़हमियाँ दिलों की, मिटाने को कौन है।
हर बात पर मशवरा, करने को हुए राजी,
पर एक ही बात थी, जिसे बताने को कौन है।
कुछ गलतियों पर अब भी, शर्मिंदा बहुत हुए,
पर ये बात उससे कहने, सुनाने को कौन है।
नाराज़गी ये मन की, दीवार बन गई 'अक्श',
एक दोस्त को दोस्त से, मिलाने को कौन है।

नकली मुस्कान

22. पूछते हैं सभी, मुस्कराने का सबब।
कैसे बताए उन्हें, कितने ग़म छुपाए रखे हैं।
अब उबन होती है, नकली अदाओं से।
जो एक चेहरे पर, कई चेहरे छुपाए रखे हैं।

3. (जीवन, समय और संघर्ष)

अपने नाम का दिया

23. है जिंदगी से क्यूँ ख़फ़ा, ये तो है एक सिलसिला,
हार-जीत से क्या गिला, ये जिंदगी में है घुला।
हर कदम पर जिंदगी, एक नई इबारत लिख रही,
तोड़ना न तुम कभी, अपने मन का हौसला।
जितनी ठोकरें जिंदगी दे, हंसके उसको कबूल कर,
जीत जाएगा एक दिन, पढ़ लिया गर ये सिला।
'अक्श' हम भी जिंदगी से, लड़ रहे हैं आज तक,
है उम्मीद कि जलेगा, अपने नाम का दिया।
तुझे जीतना है, एक दिन,
ये हार तो है, एक सिलसिला।

वक़्त का दामन

24. क्या-क्या सोच के रखा था, पर वक़्त से कुछ न छिन सका,
ये वक़्त का दामन ऐसा था, जो छुटा तो न जुड़ सका।
जब वक़्त से लड़ के हारा तो, ख़ुद को भी एहसास हुआ,
बस जख़्म मिलेंगे ख़ुद को ही, जो वक़्त के साथ न मिल सका
।
तब समझौतों की बुनियाद पड़ी, हर पल से हँसना सिखा फिर,
ये वक़्त ही था जो सिखा गया, जो ख़ुद से कभी न सिख सका
।
अए **'अक्श'** तुम्हारा वक़्त यहाँ, दुश्मन है और दोस्त भी,
इक दोस्त बनाके रख इसे, इस दुश्मन से ही सिख सका।

मंज़िल

25. कहा किस तरफ़, भटकता रहा,
मिलेंगी मंजिल, ठहर जा ज़रा।
ना घबरा तू थक के इन ठोकरों से,
है पास ही मंजिल, चल तो ज़रा।
ये जंग है तेरी, लड़ना भी है खुद,
ना देखके घबरा, ये भीड़ भरा।
जीवन है ऐसी, ना हारा है कोई,
ना जीत मिली तो, है सिख भरा।
कहा किस तरफ़, भटकता रहा,
मिलेंगी मंजिल, ठहर जा ज़रा।

तक़दीर और मेहनत

26. इंशा की तक़दीर कहाँ, कोई इंशा लिख सका,
कुदरत के हाथ वो सब, जिसे मिलना मिल सका।
दौलत की दौड़ में सभी, परेशान फिर रहे,
सुख की ये तान फिर भी कहाँ, सबको मिल सका।
ग़ुरबत से लड़ रहा कोई, तो कोई और ऊचाइयों से,
तक़दीर तो उसका हो गया, जो मेहनत का हो सका।
अपनी हथेलियों पर यहाँ, कोई देखता है लकीर,
मेहनत से, जिनके हाथ न थे, वो ख़ुद को बदल सका।
'अक्श' कब तक अपनी तक़दीर के भरोसे रहोगे तुम,
जिसने यहाँ लड़ा, ये दुनिया उसका हो सका।

ख्वाबों की ताबीर

27. परेशाँ फिर रहा, दुनिया की भीड़ में,
अपने रशुख़ के, पन्ने लिए हुए।
किस्मत की डोर भी, मेहनत है माँगता,
हर चाल चल रहे, खुद को लिये हुए।
ख्वाबों की ताबीर, मुक़म्मल है कहाँ,
ये रुकता ही नहीं, जीते जिए हुए।
पर वक़्त मुक़र्रर है, सीमाएँ न लांघो **'अक्श'**,
सब ख़्वाब भी चले गये, खुद को लिये हुए।

सबक

28. कुछ चीज़ें ज़िंदगी ने ऐसे समझाया,
समय-समय पर, अपना एहसास कराया।
गुज़री चीज़ें कहाँ से आएंगी,
बस आगे के लिए, एक नया पाठ पढ़ाया।
अब ना सुधरे तो, खोदोगे ख़ुद को गुज़रे कल सा, **'अक्श'**
यही एहसास इसने, कदम-कदम पर दिलाया।

मुक्तसर ज़िंदगी

29. मुक्तसर जिंदगी है, ऐतबार का,
बस जीत की ही ख्वाहिश, क्यों हार का नहीं?
चोटों से जब तलक, तेरा राब्ता न हो,
खुशियों का फिर यहाँ, कोई वास्ता नहीं।
दाना वही उगा, जो मिल जाए ख़ाक से,
बुनियाद के बिना, कोई रास्ता नहीं।

सफ़र-ए-ज़िंदगी

30. जहाँ (दुनिया) तेरी फ़ितरत का, हमें मालूम नहीं,
बस ये सोचकर अब चल रहा हूँ, कि एक रास्ता होगा।
सफ़र तो है, बहुत सी आएँगी, कठिनाइयाँ भी '**अक्श**, '
मगर बस जीतना है, हार मानना मुनासिब नहीं होगा।
बहुत सी सीख दे जाएगा, ये सफ़र-ए-ज़िंदगी,
तजुर्बे ही मिल जाएँ, तो कोई कम नहीं होगा।

ख्वाब खत्म न हुई।

31. चले हुए, सफ़र में हुए, न जाने कितने बरस,
मिले ठिकाने बहुत, पर आस कम न हुई।
लगा था जैसे कि, अब आस मुकम्मल होगी,
मगर फिर आस की प्यास, खत्म न हुई।
हर ठिकाने पर, जब पहुँचा तो महसूस हुआ,
ज़िंदगी ख्वाब तेरी, खत्म न हुई।

अब तो ये जिस्म भी, साथ न देता है '**अक्श**, '
आख़िरी राह में भी, ख्वाब खत्म न हुई।

खोता सितारा

32. किसको खबर है, किसको नहीं,
कहा खो गई, है ये ज़िंदगी।
गवाया है इक, खूबसूरत सितारा,
था रोशन जिससे, ये सारा ज़मी।
वक़्त की आरज़ू, अब पहाड़ों सी है,
कल-तलक जो, कट जा रहे थे यूँ ही।
अब फलक देख कर, गिन रहा हूँ सितारे,
वो रोशनी छुपा हो, नाजाने कहीं।
संभलने दो '**अक्श**', खुद को ज़रा,
ये वक़्त भी गुज़र जाएगा, बस यूँ ही।

पैसे की तलब

33. ये पैसे की तलब, इंसान से क्या क्या करवाएगा,
इस तपती हुई धूप में, मीलों पैदल चलवाएगा।
कुछ अपने लिए, कुछ अपनों के लिए,
घरों से दूर, अपनों की याद दिलाएगा।
वो तो बचपन था, जब नींद आ जाती थी,
अब तो बस थक कर, नींद आ जाएगा।

कभी जब सपने पलते थे, ख्वाबों में बहुत,
मगर इस पैसे की तलब में, सब खो जाएगा।
शौक सब पूरे माँ-बाप के, पैसों पर ही थे,
आज ये पैसा, सिर्फ जरूरत बन जाएगा।

ये पैसे की तलब, इंसान से क्या क्या करवाएगा,
इस तपती हुई धूप में, मीलों पैदल चलवाएगा।

4. (प्रेम, जुदाई और टूटे वादे)

ख्वाब और ज़िंदगी

34. जीवन की हक़ीक़त को, अब तो समझ जाओ,
वो ख़ाक समझते हैं, तुम इश्क़ समझते हो।
ये जीवन की राहें, कैसे कट पाएँगी,
तुम साथ तो चलते हो, पर साथ न होते हो।
बातें करने को अब, बस आईना ही है,
तुम ख़्वाब में बसते हो, पर पास न होते हो।
नींदों से उठने का, अब जी नहीं करता,
जब आँखें खुलती हैं, न सामने होते हो।

ग़ाफ़िल

35. कहाँ छिपोगे, इस दौर-ए-दुनिया से, ग़ाफ़िल होकर,
कुछ तमन्ना है, जो रह-रह कर मचलती है।
अब तो खामोश रहो, ना छेड़ो तुम,
जख्म गर उभरा, तो और दर्द देती है।
कभी मिलूंगा, ये वादा क्यों दिया उसने,
अब तो नज़रे, बस ख़्वाब की राह तकती है।
हमें न मालूम **'अक्श'**, कि वादे झूठे थे,
प्यार में हर झूठा ख़्वाब, भली लगती है।

अधूरी मौजूदगी

36. गफलत-ऐ-दिल ने, कई बार दगा दे डाला,
उम्मीद कर ली, मगर बात सुना ही नहीं।
ना कोई वादा रहा, दरमियाँ अपने,
एक एहसास था, जो पूरा था, मगर पूरा भी नहीं।
मुत्मई होते, मगर बात तो हो ऐसी,
कि आज जिंदा हैं, मगर जिंदा भी नहीं।
लकब हमारी, जुस्तजू की हद है **'अक्श',**
मैं सामने हूँ, मगर सामने भी नहीं।

जलता हुआ जुगनू

37. ये मुफ़लिसी दिल की मिट जाए, कोई सूरत बता देना।
कि हैंरा है दिल जिस पर, वो तस्वीर बना देना।
चमकती रौशनी है वो, अंधेरों के साए में।
मुझे उस रात का, जलता हुआ जुगनू बना देना।
कहीं फिर से चला जाऊँ ना, शमाओं की महफ़िल में।
कि जल जाऊँगा राह में, वो मंजर दिखा देना।
है ऐसी आग वो, जल रहे हैं लोग सदियों से।
सुनाए जाते हैं किस्से, मुझे फिर से सुना देना।
वही तस्वीर हम भी, कुरेदते हैं जेहन अब।
चमकती चाँद की रौशनी से नहा देना।
ये मुहब्बत, इश्क़, कितनों की जान लेगी **'अक्श'**।
मुझे भी इश्क़ में डूबा हुआ, परिंदा बना देना।

किधर जा रहे हैं

38. किधर को चले थे, किधर जा रहे हैं,
ना बस में कुछ भी, ना संभल पा रहे हैं।
जो वादों से अपनी, सजाई थी दुनिया,
वो ख्वाबों में ही बस, नज़र आ रहे हैं।
थी कितनी मुक़द्दस, वो शामें हमारी,
जो नज़रों में ही बस, नज़र आ रहे हैं।
ना अब हो सकेगा, वो वादा किसी से,
जिन वादों से हम-तुम, मुकर जा रहे हैं।
जो मिलते हो अब तुम, किसी मोड़ पर,
नज़र को झुका कर, गुज़र जा रहे हैं।
बताऊँ तुम्हें क्या, हालात **'अक्श',**
बिछड़ के तो अब हम, ना जी पा रहे हैं।

इंशा से इंशा बन जाऊँ

39. नफ़रतें कब तक, दिलों में रखकर ज़िंदा रहता
दुआ करो कि, मैं इंशा से इंशा बन जाऊँ।
करुणा, दयालुता, हर सुविचार इस दुनिया के,
एक इंशा को, जो जरूरत हो, वैसा बन जाऊँ।
'अक्श', तुमने क्यों दोस्तों को दुश्मन समझा?
जब लोग तुमसे मिलकर कहते थे, मैं तुमसा बन जाऊँ।
दुआ करो कि, मैं इंशा से इंशा बन जाऊँ।

माँ

40. बहुत उदास होता है मन, जब याद आता है,
माँ तेरी ही सूरत आँखों में, समाया रहता है।
तेरी ही खुशियों के लिये माँ, आया हूँ घर से दूर बहुत,
माँ तेरा प्यार हर ग़मों से, मुझे बचाया रहता है।
जी करता है फिरसे बच्चा होकर, रो लूँ तेरे पास मैं,
माँ तेरा प्यार मुझसे, ना छुपाया जाता है।
तु डाँट हमे हम बिगड़े तो, हर छोटी-मोटी गलती पर,
माँ तु साया बन के साथ रहे, ये दिल बोला करता है।
मेरी हीफ़ाज़त में तेरी दुआएँ, अब भी साथ देती हैं,
माँ मैं भी कुछ करूँ तेरे लिए, दिल रोया करता है।
माँ ममता की सूरत में तुम, खुदा की नेमत हो,
माँ साथ तेरे हर कदमों पर हो हम, दिल चाहा करता है।

कदर इंसान करता नहीं

41. कदर इंसान करता नहीं, किसी के होने पे,
पर डरता है उनकी खबर सुनके, खोने के।
कौन क्या है, ये तब पता चलता है,
जब बात चलती है, दूर होने के।
वैसे तो हर बात सुना देते हैं, जैसे कुछ न हो वो,
पर खूबी पता चलता है, उनके दूर होने पे।

5. (मनोबल, हौसला और प्रेरणा)

हौसले की जीत

42. वक़्त से लड़ना सीखो, हारना नहीं।
कई ख़्वाहिशें मिल जाएँगी, ख्वाहिशों के साथ।
कुछ पल की खुशी पाकर, हासिल क्या करोगे।
मिट जाओगे फिर आग सा, जलने के बाद।
मन को सदा सुलगने दे, कोयले की तरह।
राख़ का कोई मोल नहीं, जलने के बाद।
सब कुछ मिलेगा गर नज़र हो, एक निशान पर।
दो नाव पर चलोगे तो, कुछ आएगा ना साथ।
बस हौसला ही ज़िंदा रख, अपने मुकाम का।
कोई पूछेगा ना फिर हार, जितने के बाद।
उन बुलंदियों को छूते ही, शोहरत शोर मचाएगी।
सब देंगे मिसालें तेरे नाम की, जीतने के बाद।
अब **'अक्श'** तुम भी अहद करो, अपने मुकाम की।
वरना रह जाओगे गुमनाम, गुमनामियों के साथ।

शोहरत की मिसाल

43. भटकना ना कभी, अपने ख्वाबों से,
सफ़र में दोस्त तो, अनेक मिल जायेंगे।
वक़्त रुकता नहीं यहाँ किसी के लिए,
वक़्त के साथ ही, मुक़द्दर मुस्करायेंगे।
ये दुनिया है, करेगी सलाम तेरी बुलंदियों को,
उगता सूरज बनो, अँधियार मिट जायेंगे।
इतनी शोहरत मिले, कि रोशन हो जहाँ **'अक्श',**
किताबों में छपा, तेरा नाम मिले।

मेहनत और विश्वास

44. मेहनत, सब्र, और ख़ुद पे यकीन,
ये दौलत, ज़िंदगी को बनाता है हसीन।
मिलेगा सब कुछ उन्हीं को यहाँ,
जो ख़ुद पे करते हैं पुख़्ता यकीन।
ख़ुद की कमज़ोरियों से ना घबरा कभी,
कमी से ही ज़िंदा होता है यकीन।
उन बुलंदियों को पाना है तो लड़ना होगा,
इतना तो ख़ुद पे रखना यकीन।

6. (समाज, मूल्य और प्रश्न)

अस्तित्व

45. कोई कहता है हमें, घरों की लक्ष्मी,
कोई कहता है हमें, घरों की रौनक।
फिर क्यों हमारे अस्तित्व का करते हैं हरण,
फिर क्यों, जहाँ को देखने से पहले, करते हैं दफ़न।
हम उनकी ज़िंदगी में हर तरफ़ हैं शुमार,
किसी की बहन, किसी की बीबी, किसी की माँ से है पहचान
।
फिर इज़्ज़त-ओ-अज़मत पर, क्यों रहते मुक़्तलिफ़,
क्या उन्हें नज़र नहीं आता, कोई अपनों का निशान।
इन वादियों से निकलती है, जब कोई परी,
घूरने लगते हैं यहाँ के इंसान।
उनकी भी माँ, बेटियां, बहनें कोई तो होगा ज़रूर!
फिर क्यों इतना ज़ानवर, बनते गये वो इंसान।

दो बोल

46. भला लगता है, किसी की बात, दो बोल मीठे से,
कहीं ज़हर न बन जाए, जैसे शुगर का मीठे से।
दो बात कड़वे सुन, हम क्यों घबराते हैं,
ये औषधि है एक, कड़वाहट, नीम के जैसे।
खुला दुश्मन ही सही, पर राब्ता रख **'अक्श'**,
ना होगा वार कभी, तुझपे पीछे से।

भरोसे की उम्मीद

47. यकीन हमने, ऐ दुनिया, तुझसे सिखा है,
कि कैसे उठ जाती है, लोगों से भरोसे की उम्मीद।
कोई होता नहीं यहाँ, इतना खुदगर्ज,
बस लोग बन जाते हैं, जब टूटता है, भरोसे की उम्मीद।

7. (ज़िंदगी की मायूसी और स्वीकार)

ज़िंदगी से बातें

48. अब और कितनों को, सफ़ाई दे,
ज़िंदगी ऐसी ही है, किस बात की गवाही दे।
हमने माना कि, कुछ कमियाँ हैं मुझमें,
कोई मुक़म्मल होता, उसको बधाई दे।
एक ही दुनिया है, एक ही जीवन,
अए ज़िंदगी! तुझसे, कब तक लड़ाई ले।
अब साया भी लगता है, रूठा-रूठा सा,
रोशनी अब तो आजा, कुछ तो दिखाई दे।

किरदार और ख्वाब

49. ये किरदार, कहाँ तक है,
ज़मी और आसमा, कहाँ तक है।
ख्वाब की दुनिया में, ख्वाब ही दिखता है,
बादल भी जैसे, ज़मी का हिस्सा है।
ठुकरा कर खुद को, क्या हासिल किया,
ज़ख़्म जो देता है, वो ज़ख़्म भी तेरा है।
ज़मी पर कैसे, ये आसमां आ गया,
आकाश ने जैसे, इस धरती को घेरा है।

ज़िंदगी का हिसाब

50. ज़िंदगी तुझसे, अब हिसाब करना है।
दूर जितने हुए लोग, उनसे बात करना है।
गलतियाँ मुझसे भी हुईं, जरूर,
उन गलतियों को भूल, तेरे साथ चलना है।
गरूर तुझमें भी था **"अक्श'**, इस ज़िंदगी जैसा,
मांगले माफ़िया, अब सिर्फ़ प्यार करना है।

जो साथ हैं, उनको अपनाले, कहीं खो ना देना फिर,
वो लोग अपने हैं, जिनके साथ रहना है।
सबलोगों में तुमने, निकाली थी ऐ़ब (बुराई),
अब अपनी बुराइयों का भी, इज़हार करना है।

रूह का सफ़र

51\. ज़िंदगी तुझसे वादे, निभाए भी क्या,
इक जगह पे तेरा ठिकाना नहीं।
सांस मध्यम जरा सा, क्या चलने लगा,
रूह का ये अदावत, पुराना नहीं।
दोस्त बन के चले, उम्र भर तुम यहाँ,
मौत आई तो फिर, कुछ ठिकाना नहीं।
'अक्श' किसके भरोसे चलोगे यहाँ,
इक रूह ही था, जो हमारा नहीं।

वादों का आज–कल

52. ये आज़-कल, कल और आज,
इंशा तेरे वादों का, एक तीखा साज़।
ख़्वाब मुस्ताहिक है, हो मुक़म्मल जब,
ना कोई बंदिश, ना किसी का राज।
फरेबी दुनिया, फ़रियादी वादे,
टूटे ख़्वाबों से, बिखरा आज।
है कितने शिकवे, शिकायत तुझे,
ज़ज़्ब है जिल्द, एक मुक़म्मल एजाज़।
मुसलसल ज़िंदगी, ख़ुद में ज़ेब है,
हल्के मीठे से लम्हें, हल्के कड़वे अंदाज़।
'अक्श' ये आरज़ू, जीत की इंतिहा,
इनायत रब की हो, थोड़ा खुश हो मिज़ाज़।

हैरान ज़िंदगी

53. इतना तो हम भी न थे, बेख़ौफ़ कभी,
जितना कि ज़िंदगी अपनी, गुमनाम है।
जिस जगह से चला था, उसी मोड़ से,
आज बहुत ही अनजान, हैरान है।
ये सफ़र ज़िंदगी का, कहाँ ला दिया,
जिसमें हँसता था बचपन, वो वीरान है।

8. (सौन्दर्य, कल्पना और भावनात्मक चित्रण)

छोटा ताज

54. एक तस्वीर-ए-तरन्नुम, सज़ा कर देखा,
तुमने पूछा था, तो ख़्वाब बता कर देखा।
एक दायरा खींचा, हमने भी खुद के लिए,
छोटा ही सही, हमने भी ताज बना कर देखा।